CLIMATIC REGIONS OF INDIA
भारत के जलवायु प्रदेश

Dr. Sabiha Khan

जलवायु में विभिन्नता के निम्न कारण:-

- समुद्र तल से ऊंचाई
- तापमान व वर्षा का असमान वितरण
- वर्षा की मात्रा
- भौतिक कलाकृति

थोर्नथ्वेट के अनुसार भारत के जलवायु प्रदेश:

- इस अमेरिकी विद्वान ने 1933 में भारत के जलवायु विभागों के निम्न चार आधार प्रस्तुत किए:
  - वर्षा का मौसमी वितरण
  - तापमान का प्रभाव
  - वर्षा की सार्थकता
  - अंग्रेजी के अक्षरों का प्रयोग
- इन्होंने जलवायु के तत्वों का सम्मिलित प्रभाव वनस्पति पर देखा।
- इन्होंने वर्षा की सार्थकता, वर्षा प्राप्ति व वाष्पीकरण के बीच अनुपात पाया।

i) AA’r - उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु, प्रत्येक मौसम में पर्याप्त वर्षा, सदाबहार वन। प्रदेश -पश्चिमी तट मिजोरम मेघालय एवं त्रिपुरा

ii) BA’w - उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु, शीतकाल में वर्षा की कमी, आर्द्र वन। प्रदेश - पश्चिमी घाट के पूर्वी ढाल तथा पश्चिम बंगाल

iii) BB’w - आर्द्र एवं गर्म जलवायु, शीत ऋतु में वर्षा अत्यंत कम होती है। प्रदेश – असम, मेघालय, नागालैंड।

iv) CA’w - उप-आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु, शीतकाल में वर्षा की कमी, घास के मैदान। प्रदेश - प्रायद्वीपीय भारत का अधिकांश भाग

v) CB’w - उप-आर्द्र समशीतोष्ण जलवायु, शीतकाल में वर्षा की कमी, घास के मैदान। प्रदेश - गंगा के मैदान में विस्तार।

vi) DA’w - उष्णकटिबंधीय अर्द्ध -मरुस्थलीय जलवायु, ग्रीष्मकाल में वर्षा की कमी, स्टेप्स वनस्पति।प्रदेश - गुजरात एवं राजस्थान का भाग।

vii) DB’w - अर्द्ध - शुष्क मरुस्थलीय जलवायु, प्रदेश – पश्चिमी पंजाब तथा हरयाणा।

viii) DB’d -अर्द्ध - शुष्क एवं गर्म मरुस्थलीय जलवायु, प्रत्येक मौसम में वर्षा की कमी । प्रदेश – प्रायद्वीपीय भारत का वृष्टि छाया प्रदेश

ix) D’ - शरद जलवायु , प्रदेश – पूर्वी हिमालय उत्तराखंड

x) E’ - शीत जलवायु । प्रदेश – हिमालय की ऊँचे भागों तथा लद्दाख में विस्तार ।

xi) EA’d –उष्ण-कटिबंधीय मरुस्थलीय जलवायु, प्रत्येक मौसम में वर्षा की कमी , कटीली मरुस्थलीय वनस्पति । प्रदेश – राजस्थान का पश्चिमी भाग में विस्तार

- कोपेन के अनुसार भारत के जलवायु प्रदेश:
- डॉ. व्लादिमीर कोपेन ने 1918 में भारत को तीन जलवायु प्रदेशों में बांटा- शुष्क, अर्ध शुष्क तथा आर्द्र भारत।
- इसके बाद उन्होंने इन जलवायु प्रदेशों की एक नई योजना प्रस्तुत की जिसके अनुसार इन्होंने भारत को उष्णकटिबंधीय तथा महाद्वीपीय भागों में बांटने के लिए प्रायद्वीपीय भारत की उत्तरी सीमा को आधार माना।
- प्रायद्वीप के अधिकांश भाग को उष्ण सवाना प्रकार की जलवायु के रूप में तथा गंगा घाटी के अधिकांश भाग को गर्म शुष्क जलवायु के रूप में बांटा।

कोपेन के जलवायु प्रदेशों को निर्धारित करने के लिए निम्न बातों को आधार माना:-

- वार्षिक एवं मासिक औसत तापमान
- वर्षा की मात्रा
- स्थानीय वनस्पति
- अंग्रेजी अक्षरों का प्रयोग

i) Amw- ग्रीष्म ऋतु में वर्षा 200 सेंटीमीटर से अधिक होती है, शीत ऋतु अर्द्ध - शुष्क होती है, उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन मिलते है । कोंकण तथा मालाबार तट पर मिलता है।

ii) Aw- उष्णकटिबंधीय सवाना प्रकार की जलवायु मिलती है। वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है तथा शीत ऋतु शुष्क होती है ।गर्मियां काफी गर्म होती है। प्रायद्वीपीय भारत के अधिकांश भाग पर इसका विस्तार मिलता है।

iii) As - उष्णकटिबंधीय सवाना प्रकार की जलवायु मिलती है। ग्रीष्म ऋतु की तुलना में शीतकाल में वर्षा अधिक होती है।

iv) BShw - अर्ध मरुस्थलीय शुष्क जलवायु पाई जाती है। वर्षा ग्रीष्म काल में होती है और वह भी बहुत साधारण मात्रा में। यहां का औसत वार्षिक तापमान 18 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक रहता है ।राजस्थान, कर्नाटक, हरियाणा के भागों में वितरित मिलती है।

v) BWhw - यह शुष्क उष्णमरुस्थलीय जलवायु होती है, जो कि पश्चिमी राजस्थान में देखने को मिलती है । वर्षा की तुलना में वाष्पोत्सर्जन अधिक पाया जाता है, गर्मियों में तापमान अत्यधिक हो जाता है। इन प्रदेशों में कटीली मरुस्थलीय वनस्पति पाई जाती है।

vi) Dfc - यह शीतोष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु होती है, जिसमें वर्षा सभी ऋतुओं में होती है । यह सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम के कुछ भागों में पाई जाती है । शीतकाल में तापमान 10 डिग्री सेंटीग्रेड से कम रहता है। ग्रीष्म काल छोटा किंतु वर्षा वाला होता है।

vii) Cwg - यह समशीतोष्ण आर्द्र जलवायु होती है, जिसमें शीतकाल शुष्क होता है, ग्रीष्म काल वर्षा वाला होता है तथा काफी गर्म होता है । इसका विस्तार उत्तर प्रदेश, बिहार, पूर्वी राजस्थान, मध्य-प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड में पाया जाता है।

viii) E - यह जलवायु ध्रुवीय प्रकार की होती है, जहां सबसे गर्म कहां का तापमान भी 10 डिग्री सेंटीग्रेड से कम होता है । इसका विस्तार जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में पाया जाता है।

ix) Et - यह टूंडला प्रकार की जलवायु है, जा वर्ष भर तापमान शून्य डिग्री सेंटीग्रेड के करीब रहता है ।लद्दाख, उत्तरी जम्मू कश्मीर के क्षेत्र में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

जी.टी. ट्रीवार्था के अनुसार भारत के जलवायु प्रदेश ने अपनी पुस्तक में भारत के जलवायु प्रदेश पर अपने विचार प्रकट किए और कोपेन की योजना में संशोधन किए इनका वर्गीकरण सरल एवं बोद्धगम्य है। भारत के चार प्रमुख विभाग किए हैं और फिर उनको 7 उप विभागों में बांटा है।

1) A - उष्णकटिबंधीय जलवायु। तापमान किसी भी ऋतु में 18 डिग्री सेंटीग्रेड से कम नहीं होता। इसके दो उपविभाग है:

i) Am - यह है उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु प्रदेश है, जहां औसत वार्षिक तापमान 27 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक रहता है और औसत वार्षिक वर्षा 250 सेंटीमीटर होती है । पश्चिमी तटीय प्रदेश, त्रिपुरा तथा असम का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

ii) Aw - यह उष्णकटिबंधीय मानसूनी सवाना प्रकार की जलवायु है। यह जलवायु आर्द्र एवं शुष्क दोनों विशेषताएं लिए होती है। औसत तापमान 27 डिग्री सेंटीग्रेड के करीब होता है, औसत वार्षिक वर्षा 100 सेंटीमीटर जो कि सिर्फ ग्रीष्म ऋतु में होती है । प्रायद्वीपीय भारत का अधिकांश भाग इसके अंतर्गत आता है।

2) B - उष्ण प्रकार की जलवायु है जिसमें वर्ष का काफी समय शुष्क परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसके तीन उपविभाग हैं:

iii) Bs - यह है उष्णकटिबंधीय सवाना प्रकार की जलवायु है। औसत वार्षिक तापमान 27 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक रहता है तथा औसत वार्षिक वर्षा 100 सेंटीमीटर से कम रहती है। वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है। इनका विस्तार प्रायद्वीपीय भारत का वृष्टि छाया प्रदेश है ,जहां घास के मैदान पाए जाते हैं।

iv) Bsh - यह उष्ण और अर्ध उष्णकटिबंधीय स्टेप्स प्रकार की जलवायु है। औसत वार्षिक तापमान 27 डिग्री सेंटीग्रेड तथा औसत वार्षिक वर्षा 50 से लेकर 100 सेंटीमीटर तक होती है। यह अर्ध शुष्क प्रदेश है जहां घास के मैदान पाए जाते हैं। गुजरात एवं मध्य पश्चिमी राजस्थान एवं दक्षिणी हरियाणा में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

v) Bwh - यह उष्ण और अर्ध उष्णकटिबंधीय मरुस्थलीय प्रकार की जलवायु है । गर्मियों में तापमान बहुत उच्च होते हैं तथा वर्षा बहुत ही कम होती है। कँटीली वनस्पतियां पाई जाती है । राजस्थान के पश्चिमी भाग एवं कच्छ प्रदेश में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

- 3) C - **यह अर्द्ध उष्णकटिबंधीय जलवायु होती है जहां शीत ऋतु शुष्क तथा ठंडा होता है। इसका एक ही उपविभाग है।**
- **Vi) Caw - शीतकाल का औसत तापमान 18 डिग्री सेंटीग्रेड के करीब रहता है। गंगा के मैदान में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है। इसके पश्चिमी भाग में वर्षा की मात्रा कम जबकि पूर्वी भाग में वर्षा अधिक होती है।**
- **4) H - यह पर्वतीय जलवायु को प्रदर्शित करता है। जहां ऊंचाई बढ़ने के साथ-साथ तापमान कम होता जाता है और पर्वतीय भागों में ग्रीष्म काल में वर्षा तथा शीतकाल में हिमपात देखने को मिलता है। भारत में जम्मू-कश्मीर, हिमाचल-प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।**

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.